एक से हैं अर्थात 'प्यार' भी सड़क की तरह सपाट और भावशून्य हो चुके हैं। भावावेग का कोई स्थान नहीं रह गया है। जिस दौर में इंसान और इंसानी रिश्ते प्रोडक्ट में तब्दील हो जाएँ वहाँ स्वाभाविक है कि मानवीय नाते–रिश्तों का बिखरना, टूटना स्वाभाविक है। संवेदनशील जीवन, भाव रहित भाषा और व्यवहार आज के दौर की पहचान के रूप में स्वीकार कर लिए गए हैं। 'फर्क़ नहीं पड़ता' हमारे युग का नारा बन चुका है। यह सर्वाधिक चिंता का विषय है।

केदारनाथ सिंह ने हमारे समकाल में प्रसरित अजनबीपन का मार्मिक चित्रण करते हुए लिखा है कि जिन्हें हम नहीं जानते या पहचानते हैं उनके प्रति हमारा जैसा भाव रहता है ठीक वही भाव पास बैठे मित्र के प्रति भी प्रकट हो रहा है। एक अजनबीपन की स्थिति बनी हुई है। यह अपने समय की सबसे बड़ी विडंबना है। अपनी बोली–बानी में हम अपने को अभिव्यक्त करने में लज्जित महसूस कर रहे हैं। कवि कहता है कि वर्तमान समय में मनुष्य की जीवन शैली बनावटी और दिखावटी हो गई है। व्यक्ति के मन के भीतर जो बात होती है वह उसे व्यक्त नहीं करता। मुंह से बाहर जो बात निकलती है वह बनावटी और झूठी होती है। अपनत्व खो गया है। एक भयानक दौर से गुजर रहे हैं हम। तमाम विसंगतियों और विडंबनाओं के बीच मनुष्य घुटता–पीसता, कराहता हुआ जीवन निर्वाह कर रहा है। कवि ने इस विकट समय की विकरालता को स्पष्ट करते हुए जो बिंब योजना प्रस्तुत की है वह निश्चित तौर पर अभिनव है – 'जब रक्त की शिराएँ शरीर से कटकर/ अलग हो जाती हैं।' रक्त विहीन शरीर का कोई महत्व नहीं होता है। संवेदनहीन जीवन की कोई अहमियत नहीं रह जाती। अपनी जड़ से जुड़कर ही मनुष्य अपने आपको बचाए रख सकता है। मौजूदा स्थिति 'जूते के अंदर की एक नन्ही–सी कील' के समान गड़ने लगती है। उम्मीद करनी चाहिए कि मनुष्य उस नन्ही सी कील को निकाल कर फेंक देगा। इससे मनुष्य और मनुष्यता की विजय होगी।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. केदारनाथ सिंह की कविताओं में बिंब योजना को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

   .....
   .....
   .....

2. केदारनाथ सिंह के रचना संसार में अभिव्यक्त बदलते समय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

   .....
   .....
   .....

3. पठित कविताओं के आधार पर केदारनाथ सिंह के काव्य सौंदर्य का उद्‌घाटन कीजिए।

   .....
   .....
   .....

4. समकालीन कविता के विकास में केदारनाथ सिंह के योगदान पर विचार कीजिए।

   .....
   .....
   .....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY